मठों का ध्वंस कर दिया तो वह महमूद गजनवी का पुनर्प्रकटन क्यों न था? जब फ्रांस ने 76 मस्जिदें बंद करा दीं, तब महमूद गजनवी कौन-सी कब्र में सोया हुआ था? 1850 में अलेप्पो शहर में दंगाई मुस्लिमों ने अलेप्पो में छ: चर्च नष्ट कर दिये। तब मुहम्मद गजनवी प्रकट हुआ क्यों नहीं लगा हिंदी कवि को? दमस्कस में सेंट जॉन बेसिलिका को उमय्यद मस्जिद में तब्दील कर दिया गया। वैसे यह बेसिलिका बना भी जुपिटर के मंदिर को परिवर्तित करके ही था।

बहुत आसानी और मधुरता के साथ राम को दिक् और काल से ऐसे मुक्त किया जा सकता है कि जनमन की कोई धुरी या ध्रुव ही न रहे और राम की व्याप्ति ही राम की वर्जना बन जाए। प्रमोद कुमार तब लिख रहे थे : **घर-घर में थे राम/ हर आँगन राम की जन्म-भूमि / मेरे गाँव से अयोध्या जाना कहीं और जाना न था / लोग जो कुछ रोज लेते / वही सत्तू-नमक और काम भर नाम / पोटली में बाँध निकल पड़ते/ और विदेह हो जाते/ . . . अयोध्या भी पूरा साथ निभाती / वह कभी छोड़ कर जाती नहीं / औरतों में वह मंगल-गीत गाती हुई / कभी भी सुन ली जाती /. . . एक दिन एक अयोध्या मेरे गाँव में घुस आई / वह गीत गाती हुई नहीं/ चीखती चिल्लाती हुई आई / . . .वह ऐसी अयोध्या थी / जो कुछ ही देर में / घरों के राम को बेकार कह गई/ वह बता गई कि अयोध्या वहाँ नहीं है/ जहाँ हम जानते रहे युगों से।'**

अयोध्या ही नहीं, अल्लाह को भी हम जन्म-जन्मांतर से अपने हृदय में जानते रहे और यह भी नहीं समझ पाए कि यदि वह सर्वत्र है तो वह उन मंदिरों में क्यों न था जिन्हें तोड़ा जाता रहा? क्या ये टूटे हुए स्थान हमारे देश की देह में पड़ गई गाँठें नहीं हैं या देश के मन में पैदा हो गई ग्रंथियाँ नहीं हैं? इन्हें एक अतीत की तरह पढ़ाया जाता तो इन अत्याचारों का ब्याज नहीं चढ़ता और एक विरेचन हो जाता जिसमें एक आहत सभ्यता के घावों की भाप निकल जाती। लेकिन उसका उलटा कर ऐसे लोगों को गौरवान्वित किया गया। दुनिया का कौन देश अपनी जनता का नरसंहार करने वाले को महान की तरह पढ़ाता और दिखाता है? अभी कुछ हजार कश्मीरी पंडितों के नरसंहार पर देश की भावना हम देख रहे हैं, लेकिन इसी देश में हमने उस अकबर को महान की तरह पढ़ाया और दिखाया जिसने चित्तौड़ में तीस हजार नागरिकों का कत्ले आम किया था।

राम वे थे जिनसे हमारे आत्मविश्वास की सुबह होती है, उनका नाम एक सोनिक थिरेपी है, जीवित मंत्रोपचार। वे असुविधाजनक प्रश्नों से पलायन करना नहीं सिखाते हैं। वे हमारे दीमक लगे हुए विचारों का आश्रय भी नहीं हैं। वे अपने प्रेम के गौरव को रखने के लिए समन्दर पार कर जाएँगे। उनकी मूर्ति पत्थर की भी हो तो भी वह वक्त के समंदर में नहीं डूबती है। राम भारतीय चेतना की जलवायु में हमेशा खिला रहने वाला ब्रह्मकमल हैं। कुंवर नारायण कहते हैं कि **'सविनय निवेदन है प्रभु कि लौट जाओ/ किसी पुरान किसी धर्मग्रंथ में/ सकुशल सपत्नीक/ अब के जंगल वो जंगल नहीं/ जिनमें घूमा करते थे वाल्मीक!'** लेकिन राम के समय भी, क्या करें, जंगल में रावण पहुँच ही जाते थे, उनकी उस पत्नी का अपहरण करने जिसका इतना ही दोष था कि उसके 'होने' मात्र से शूर्पणखाओं को असह्य ईर्ष्या होती थी। राम के समय भी, क्या करें, जंगल ताड़का, मारीच, सुबाहु, कबंध आदि से आक्रांत थे। वापस लौट जाना तब भी उनके लिए एक विकल्प नहीं था, अब भी नहीं है। राम पुराण और धर्मग्रंथ की चीज भी नहीं हैं, न थे। इसी अंक में अग्निशेखर का एक लेख राम की व्याप्ति कश्मीर में कैसे है, यह बताता है। इंदु चिंता जी का लेख केरल में राम की स्मृति के एक महत्त्वपूर्ण पक्ष को बताता है। राम कश्मीर से केरल तक भारत का भूगोल ही नहीं हैं, उनकी स्मृति भारत के बाहर दुनिया भर में तरह-तरह से है। यह उनका भौगोलिक सगुण उनके निर्गुण की सर्वव्याप्ति का विरोधी नहीं है। जब हम खिड़की खोलते हैं तब वह खिड़की हमारी सीमा नहीं है, वह हमारे घर के कमरे की घुटन को बाहर की हवा से खतम कर हमें ताजादम करने के लिए है। जो लोग नकली रामभक्त हैं, वे फाश भी हो जायेंगे, उनकी चिंता नहीं कीजिए तुलसीदास जी बहुत पहले उनका पता बता गये थे **'जे जन्मे कलिकाल कराला/ करतब बायख़ भेष मराला/ बंचक भगत कहाई राम के/ किंकर कंचन कोह काम के।'**

नकली रामभक्तों से चिढ़ राम से चिढ़ या राम के अवमूल्यन में नहीं बदलनी चाहिए, बस यही निवेदन है।

(मनोज श्रीवास्तव)

अनुक्रम

सम्पादकीय
समय और विचार-24
आधुनिक समय में सार्थक राम/**रमेश दवे/9**
द्रौपदी स्वयंवर की गाथा/**कुसुमलता केडिया/11**
स्मृति आलेख
राम, कृष्ण, शिव/ **राममनोहर लोहिया/14**
आलेख
निर्वासन में स्थानचेतना : कश्मीर में राम/**अग्निशेखर/18**
सुंदरकांड में तुलसी की 'सकल ताड़ना' का विज्ञान/**मनोज श्रीवास्तव/22**
प्रेम के अवतार प्रभु श्री राम/**आदित्य शुक्ल/35**
युगांतर को समझने की कुंजी हैं हनुमान/**विनोद शाही/39**
यावत् रामकथा लोके तावत् जीवतु बालक:/**गिरिजा किशोर पाठक/44**
रामलला काव्य के दर्पण में/**कृष्णगोपाल मिश्र/48**
रामायणों में विज्ञान/**प्रमोद भार्गव/52**
जी, रामजी अभी तो घर में हैं/**लक्ष्मीकांत जवणे/60**
श्रीराम ने जान लिया था दु:ख का चरित्र / **मुरलीधर चाँदनीवाला/64**
वाल्मीकि के राम/**इलाघोष/66**
राम की शक्ति पूजा में निराला की काव्य-दृष्टि/**नीलिमा वर्मा/73**
अवधी लोक साहित्य में राम और लोकमंगल की भावना / **शिवचरण चौहान/80**
महान संत रविदास को प्रताड़ित बताने का अपराध/**रामेश्वर मिश्र पंकज/83**
ललित निबंध
राम फेरी में राम/**नर्मदाप्रसाद सिसोदिया/87**
स्मरणांजलि
कंठ का वरदान लता मंगेशकर/ **बसंत निरगुणे/92**
नाद-स्वर का उत्सव / **सुशोभित/95**
अनुवाद
अन्दाल्लुर कवु और रामायण / **मूल : इंदु चिंता/ अनु. : मनोज श्रीवास्तव/97**
कहानी
वायरस/**सर्वेश सिंह/101**
डैडी, चाचा कब आएँगे/**अश्विनीकुमार दुबे/108**
अम्मा की डोली/**उर्मिला शुक्ल/113**
अदृश्य आवाजों का विसर्जन /**प्रगति गुप्ता/119**
मीठा जहर/ **कुसुम रानी नैथानी/124**

288

कविता
बिम्ब/उद्भ्रांत/131
उखड़ती साँसें / आभा भारती/134
दो दुनिया/अमित उपमन्यु/135
पहाड़/ब्रजरतन जोशी/137
पुनर्जीवन/नरेश अग्रवाल/139
दृश्यों का कवि/देवेश पाथ सारिया/141
मुझे उपलब्धि न जानो/भावना व्यास/143
इत्रवाले/नेहा नरूका/144
गीत/गजल
पतझड़ को मधुमास लिखेंगे/दिनेश मालवीय 'अश्क'/147
ढूँढ़ रहे हैं/वाहिद फ़राज़/148
शोध आलेख
लोक साहित्य में गाँधी/अरुण कुमार पांडे/149
चतुर्व्यूह के आलोक में योगसूत्र का दार्शनिक आधार/प्रवेश जाटव/ गणेश शंकर गिरि/153
पारिजात : गंगा जमुनी तहजीब /सिराजुल हक/156
स्थानीय भाषाओं की वर्तमान चुनौतियाँ/अल्पना शर्मा/159
भारत भारती में राष्ट्र भाव की संकल्पना/अजीत कुमार पुरी/165
पुस्तक परिचय
माँ जिंदा है, बारूद का ढेर (राम प्यारे प्रजापति)/ राधारानी चौहान/169
समीक्षा
राम अयन (राजेश श्रीवास्तव)/ गोकुल सोनी/170
राम रावण युद्ध (नीलेश नीलकांत ओक)/ विनीता राहुरीकर/174
संभव होने की अजस्त्र धारा (पवन माथुर) / हर्षबाला शर्मा/ 176
मराठी से हिंदी शब्द संग्रह(ज. ग. फगरे)/प्रतिभा गुर्जर/178
जो मिले (दामोदर दत्त दीक्षित)/अनीता सक्सेना/179
बूँद तथा अन्य कहानियाँ (ताराचंद मकसाने)/नवीन नंदवाना /180
युगाधिपति (चंद्रप्रकाश जायसवाल) श्याम बिहारी सक्सेना/181
समर्पित सुधियाँ (शरद सिंह)/मैथिली मिलिंद साठे/182
संघर्ष से विजयपथ की ओर : कैलाशचन्द्र पंत (अर्चना निगम) / प्रदीप कुमार/184
रजत श्रृंखला(कांता रॉय)/केतकी/188
पत्रांश/189

आधुनिक समय में सार्थक राम

-रमेश दवे

वरिष्ठ साहित्यकार एवं शिक्षाविद।

जन्म - 8 जून 1936।

रचनाएँ- पचास से अधिक पुस्तकें प्रकाशित।

सम्मान - कुसुमांजलि साहित्य सम्मान, सहित अनेक सम्मानों से सम्मानित।

'राम' एक व्यक्तिवाचक संज्ञा है, एक पुल्लिंग नाम है। पूरा नाम रामचंद्र है। उन्हें हम उनकी अवतार-संज्ञा, ईश्वर-संज्ञा और विष्णु के पर्याय की संज्ञा से मुक्त करके देखें तो वे वैसे ही मनुष्य थे, जैसे आज हम हैं। उनका मनुष्य रूप में जन्म लेने का प्रमाण है, उनका दशरथ-पुत्र के रूप में माता कौशल्या की कोख से जन्म लेना। तात्पर्य है कि राम उस समय राजवंश की लंबी परंपरा और पीढ़ियों में जन्मे एक ऐसे पुरुष थे जो किसी डॉरविन की विकासवादी अवधारणा के प्रतीक न होकर एक संपूर्ण स्वस्थ प्राणीशास्त्रीय मनुष्य थे। चार भाई भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न सहित राम ज्येष्ठ भ्राता तो थे ही साथ ही एक बहन भी थी जिसका नाम शांता था। राम जन्म का उत्सव त्रेता युग में उसी प्रकार मनाया गया था जिस प्रकार पुत्र उत्पन्न होने पर या उसके जन्मदिवस पर प्रतिवर्ष सारी दुनिया के आधुनिक लोग आज भी मनाते हैं। राम जन्म पर रामनवमी को अब तो कई उत्साही युवकों द्वारा मंदिरों अथवा सार्वजनिक समारोहों में केक भी काटा जाता है। लेकिन इस सबसे हम आधुनिकता को राम के माध्यम से जानने के बजाय कुछ अन्य तथ्यों पर विचार करें तो बेहतर होगा। राम के मानवीय जन्म से डॉरविन सिद्धांत भ्रामक हुआ, इसका प्रमाण तो प्रसिद्ध जर्मन मनोवैज्ञानिक एवं विचारक नीत्थे ने भी दिया था जिसने विकासवादी दर्शन को अपने मनुष्यवादी दर्शन से निरस्त कर दिया था।

पहला तथ्य तो यह है की राम चूँकि राजवंश में जन्मे थे इसलिए राज्य की रक्षा वही कर सकता है जो राज्य को नैतिक और सामाजिक शस्त्र शिक्षा दे सके। राम ने मात्र अपनी किशोर उम्र में यह शिक्षा ग्रहण कर शस्त्र-विद्या से दुष्ट शक्तियों का संघार किया अर्थात् राम का राज-बोध ठीक वैसे ही था जैसा आज की सत्ता का आतंकवाद, नक्सलवाद के विरुद्ध पुलिस या सशस्त्र-बलों के माध्यम से आजमाया जाकर राज्य-क्षेत्र में शांति-व्यवस्था कायम की जाती है एवं हिंसक अपराधी तत्वों के साथ एनकाउंटर किया जाता है। राम ने मात्र 14-15 वर्ष की आयु में यह एनकाउंटर किया और राजधर्म का निर्वाह करते हुए आसुरी-आतंकवाद को समाप्त कर, संतों, ऋषियों की सभ्य एवं साधना उन्मुखी ज्ञान-परंपरा की रक्षा की थी। यहाँ तक कि जो रक्षा-सभ्यता के द्वारा वनों को उजाड़ रहे थे, राम ने वन-गमन सर्वप्रथम किशोर-काल में और बाद में वनवास-काल में करके वनों एवं पर्यावरण की रक्षा की थी। राम-समय की वही चेतना अब हमारे विज्ञान-समय में भी पैदा की गई है ताकि कोई ऋष्यमूक पर्वत, कोई किष्किंधा आज का माफिया-अपराधों का शिकार न हो और वन, पर्वत, नदी सब सुरक्षित होकर एक सुंदर-काल रच सकें जिसमें प्रकृति और पुरुष समानशील हो जाएँ।

आधुनिक समय में राम या राम की आधुनिकता के निहितार्थ खोजने के लिए, सर्वप्रथम तो प्राचीनता, आदिम-काल या पूर्व-काल की अवधारणा से मुक्त होकर सोचना होगा। आधुनिकता एक प्रकार का गतिशील जीवन-संदर्भ है जो प्राचीन की जड़ता या प्रचलित विश्वासों के विरुद्ध प्रति-

बूँद तथा अन्य कहानियाँ

पुस्तक : बूँद तथा अन्य कहानियाँ
लेखक : ताराचंद मकसाने

- नवीन नन्दवाना

'बूँद तथा अन्य कहानियाँ' शीर्षक कहानी संग्रह में ताराचंद मकसाने की बाल कहानियाँ संग्रहित हैं। संग्रह की पहली कहानी का शीर्षक है-'पहचान'। अपनी इस कहानी के माध्यम से कहानीकार ने इस बात की ओर संकेत करने का प्रयास किया है कि किसी व्यक्ति की पहचान उसकी वेशभूषा आदि से न होकर उसके आचरण और व्यवहार से होती है। 'कागज का टुकड़ा' कहानी खासतौर से उन बच्चों के लिए एक बड़ा संदेश देती है जो पढ़ने-पढ़ाने और किसी काम से अपने मूल शहर से अन्य शहरों में जाते हैं।

संग्रह की कहानी 'तरकीब' हमारे बालकों के लिए यह संदेश देती है कि कई बार जायज बात पर भी कोई व्यक्ति आपकी बात को अनसुना कर रहा हो और आपके निवेदन को नजरअंदाज कर रहा हो तो, वह हमारी बात को जानबूझकर अनसुना कर रहा होता है तो ऐसे में हमें तब कुछ ऐसी तरकीब से काम लेना चाहिए जिससे कि साँप भी मर जाए और लाठी भी ना टूटे।

'क्या फर्क पड़ता है' कहानी आज की समस्याओं को उठाती है। कहानी इस बात की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करती है कि सरकारी सेवा में लगे विभिन्न पदों के नौकरशाह अपने ऑफिस से छोटी-मोटी स्टेशनरी और अन्य दैनिक जरूरत की चीजें उठा लाते हैं और वे इस काम को चोरी भी नहीं समझते हैं। 'घर की मुर्गी दाल बराबर' आज के पारिवारिक व सामाजिक जीवन और हमारी शिक्षा व्यवस्था आदि पर करारा व्यंग्य करती है। कहानीकार ने इस कहानी के माध्यम से यह दर्शाने का प्रयास किया है कि बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के लिए महँगे स्कूलों का और मोटी फीस वाली ट्यूशन क्लासेस का चयन करना ही सब कुछ नहीं है क्योंकि सफलता पैसे के बल पर खरीदी नहीं जा सकती।

'बूँद' कहानी, संग्रह की ऐसी प्रतिनिधि कहानी है जिसे आधार पर रचनाकार ने अपने इस कहानी संग्रह का शीर्षक भी तय किया है। कहानी बताती है कि विपरीत परिस्थितियों में छोटी-छोटी बचत की राशि मिलाकर भी एक बड़ा सहयोग साबित हो सकता है। कहानी संवेदना के उच्च स्तर तक पाठकों को ले जाती है। सहज भाषा में कहानी संदेश प्रेषित करने में सफल सिद्ध होती है

'मनोकामना' भारतीय समाज प्रचलित तंत्र-मंत्र, टोने-टोटके और ढोंगी बाबाओं के यथार्थ का उद्घाटन करती है। संग्रह की कहानी 'बीमारी' हमें यह संदेश देती है कि किसी भी परिवार या समाज में कोई घटना पहले से सूचना देकर नहीं आती। संग्रह की कहानी 'सच्चा खिलाड़ी' आज की हमारी बाल एवं किशोर पीढ़ी को एक बहुत बड़ा संदेश देती है। 'थैंक्यू मुंबई' आज की पीढ़ी को समय प्रबंधन सिखाने के लिए कारगर सिद्ध हो सकती है।

संग्रह की आखिरी कहानी 'वचन' है। यह कहानी भारतीय अशिक्षित और ग्रामीण जीवन के यथार्थ को उद्घाटित करती है। कहा जा सकता है कि संग्रह की कहानियाँ बाल जीवन को संदेश देने वाली कहानियाँ हैं। जीवन की आपाधापी में प्रतिस्पर्धा से बचाती हैं। संग्रह की कहानियाँ पठनीय हैं और हमारी बाल एवं युवा पीढ़ी को एक सही दिशा देने में समर्थ भी।

ए-जी-9, रामेश्वरम् अपार्टमेंट,
हनुमान नगर, मनवाखेड़ा, उदयपुर- 313003
मो.- 09828351618

युगाधिपति

- श्याम बिहारी सक्सेना

राम कथा पर अब तक लिखी रचनाओं की गिनती करना सहज संभव नहीं। तुलसी दास कृत राम चरितमानस से पूर्व महर्षि वाल्मीकि रामायण को यदि हम प्रथम मान लें, तो भी लगता है, वेदों में राम पहले ही अवस्थित थे। राम केवल संस्कृत भाषा में ही नहीं, पाली में भी उद्धृत है। वहीं हिंदी गुजराती उर्दू, तमिल, तेलगू, मराठी, बंगला, सहित अंग्रेजी साहित्य में भी इसके गुणगान पठनीय हैं। इतना ही नहीं विश्व की अन्य भाषाओं में जैसे चीनी, जर्मनी, फ्रांसीस, भी इस पात्र को अपनी-अपनी सोच समझ में व्याख्यायित कर चुकी हैं। कहने का तात्पर्य राम भारतीय मानस में ही नहीं संपूर्ण विश्व में व्याप्त हैं प्रागऐतिहासिक से लेकर वर्तमान में भी राम कथा लिखी जा रही है। गद्य और पद्य दोनों विधाओं के साथ नाट्य विधा में भी राम रमे हैं।

इतना कुछ लिखा जाने के बाद भी ऐसा क्या रह गया, जो श्री चन्द्रप्रकाश जायसवाल के लिये अशेष था यही जानने की जिज्ञासा ने मुझे 'युगाधिपति' पढ़ने को बाध्य किया। मैंने बड़े मनोयोग से इस कृति को पढ़ा। जो भी इससे पहले पढ़ा था, उसमें राम-अवतार, आराध्य और मानवीय जीवन के सर्वश्रेष्ठ गुणागार के रूप में उन्हें वर्णित किया गया। अर्थात् लोग राम को कैसा देखते हैं, उन्होंने राम को कितना जाना। किंतु यहाँ राम स्वयं अपने बारे में क्या कहते हैं यही इस कृति का मूल आधार हैं। इतना ही नहीं राम से जुड़े कुछ विशेष पात्र भी स्वयं अपने बारे में क्या कहते है, यह भी इस कृति की विशेषता हैं।

पुस्तक : समर्पिता।
लेखक : चंद्रप्रकाश जायसवाल।
प्रकाशक : पहले पहल प्रकाशन, प्रेस परिसर, एम. पी. नगर, भोपाल (म.प्र.)।

इस उपन्यास की अनुक्रमिका में छ: पात्र हैं रावण, सीता, भरत, कैकयी हनुमान, तथा राम हैं जो आत्मकथ्य के रूप में अपनी जीवनी, परिस्थिति जन्य दशाओं में वैचारिक मन:दशायें तथा देश-काल के अनुरूप तर्क विवेक और मनतव्य व्यक्त करते हैं। आत्मकथ्य की यह शैली श्री चन्द्रप्रकाश को अन्य लेखकों से हटकर नया प्रकाश देती हैं।

श्री जायसवाल की इस कृति में राम अवतार रूप में नहीं बल्कि यथार्थ जगत में ऐसे पुरुष हैं जिन्हें दिये गये दायित्वों का निर्वाह करने के लिये परिस्थिति जन्य घटनाओं से गुजरना पड़ता हैं और अपने विवेक-अध्ययन-योग्यता और पूर्ण क्षमता से उसका निर्वाह करना पड़ता है। वह पुत्र-भाई-पति और युवराज की भूमिका में शिष्य-सहोदर-और प्रजा वत्सल के रूप में क्या कुछ कर सके उसका आत्म-विश्लेषण किया। यही दशा रावण की रही। उसकी अपनी मान्यता, संस्कार और भक्ति से उसने क्या पाया तथा क्या खोया, इसका वृहद वर्णन किया। राक्षस संस्कृति और आर्य संस्कृति के विरोधाभास से युद्ध की दशा निर्मित हुई। रावण ने क्रोध, दम्भ, और बाहुबल के प्रभाव में तथा हठधर्म के दुराग्रह से मृत्यु को स्वीकार किया किंतु हार नहीं मानी।

रावण कथनम् में ऐसी ही चर्चा की गई है। सीता कथनम् में भारतीय नारी को श्रेष्ठतम रूपायित करने में लेखक ने सराहनीय कार्य किया हैं। सीता ने अपने पिता जनक एवं माता सुनयना के प्रति जो भाव व्यक्त किये हैं वह उल्लेखनीय हैं। अष्टावक्र का उल्लेख भी समसामयिक कर जनक की गुरुभक्ति का एक सुन्दर प्रमाण दिया। पत्नि के रूप में राम के प्रति समर्पण श्लाघनीय हैं। कैकयी भी इस अनुक्रमिका का श्रेष्ठ पक्ष हैं। इस पात्र के साथ प्राय:सभी पूर्व लेखकों ने उतना न्याय नहीं किया। यथार्थ रूप में तात्कालीन देशकाल की दशा में कैकई की दूरदर्शिता सराहनीय है। उसका तर्क विवेक और लोक से हट कर हठधर्म को मानने की तथा मना लेने की बात ने, इतिहास को मोड दिया जो कालांतर में विश्व कल्याण का आधार बनी। स्वयं खलनायिका बनकर भी वह आत्मरूप में राम की जननी ही रही और भरत के क्रोध पर भी अस्थिर नहीं हुई। राम के प्रति भक्ति का भाव अपूर्ण ही रहता यदि हनुमान कथनम् न लिखा जाता। उसी तरह भरत कथनम् में भ्रातृप्रेम और त्याग के साथ उत्सर्ग की चर्चा की पठनीय हैं। एक सीमित आलेख में युगाधिपति पर सम्पूर्ण प्रकाश डालना संभव नहीं। इतना कहना पर्याप्त होगा कि राम कथा की चर्चा में युगाधिपति को पढ़ना उसे चर्चा में समाहित करना आनन्दमयी होगा।

श्री जायसवाल ने अपने चिंतन मनन और अध्ययनशील व्यक्तित्व की छाप स्थापित की हैं। श्री चन्द्रप्रकाश जायसवाल संस्कृत संस्कृति एवं साहित्य की विभिन्न शाखाओं में चहकते हुए मिले। साहित्य के मानसरोवर में ज्ञानगंगा का अवगाहन करते मानस रूपी हंस की तरह जन मानस का सद् साहित्य रचते रहें, यहीं कामना है।

368, रचना नगर,
भोपाल-(म.प्र.)